पं.क्र. (04/21/05/207665/19)

अन्तरा शब्दशक्ति

प्रकाशन एवं बहुउद्देशीय संस्था

www.antrashabdshakti.com

शब्द
से संवेदना तक...
लेखन से
परिवर्तन तक...

हिन्दी
हमारी पहचान
हमारी शक्ति

'समसामयिक प्रश्नों पर आपकी कलम'

(लेख प्रतियोगिता)

विचार...
चिंतन...
संवाद...
और
एक बेहतर
कल की ओर...

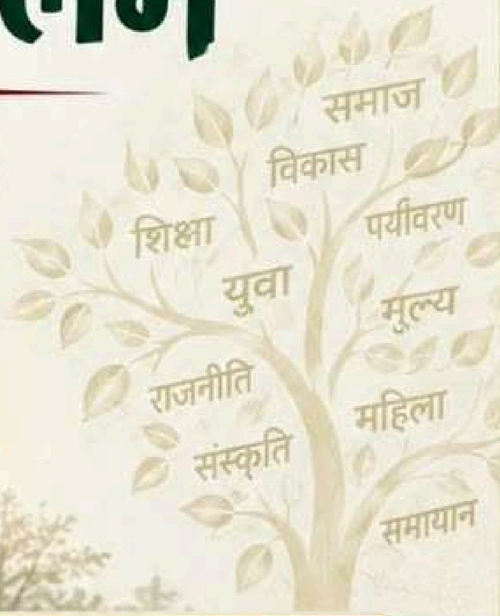

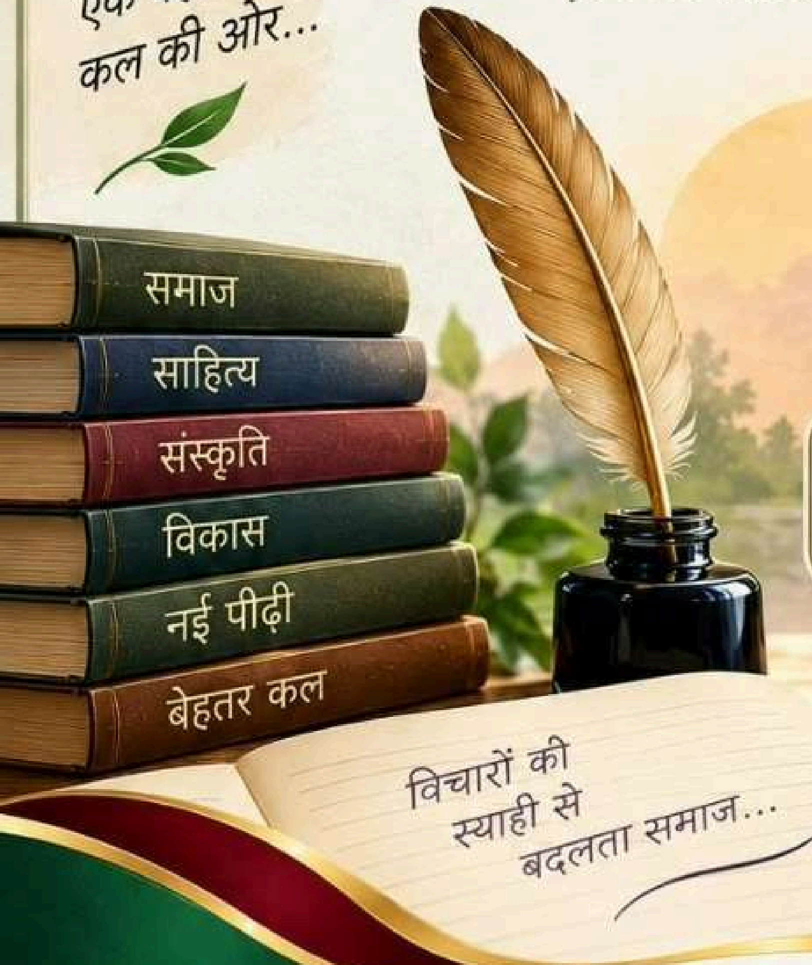

रचनाकार :-

उमेश गहलोत

आयोजक:-

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन

वारासिवनी (म.प्र.)

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)

अन्तरा शब्दशक्ति

प्रकाशन एवं बहुददेशीय संस्था
www.antrashabdshakti.com

कलम की शक्ति, समाज की दिशा

हिन्दी
हमारी पहचान
हमारी शक्ति

शब्द से संवेदन तक...
लेखन से परिवर्तन तक...

संपादक : डॉ. प्रीति समकित सुराना
तकनीकी संपादक : Webcoodee.com
मुख्य कार्यालय : 15 नेहरू चौक, वारासिवनी,
जिला बालाधाट (म.प्र.) 481331

Antrashabdshaktiprakashan

संपर्क : 9009423393
ईमेल : antrashabdshakti@gmail.com
वेबसाइट : www.antrashabdshakti.com

वैधानिक सूचना

पुस्तक में प्रकाशित सभी रचनाएँ संबंधित रचनाकारों की मौलिक अभिव्यक्तियाँ हैं। प्रत्येक रचना में व्यक्त विचार, कथ्य एवं अभिमत के लिए संबंधित रचनाकार स्वयं उतरदायी हैं। रचनाओं के चयन एवं प्रकाशन का उद्देश्य साहित्यिक अभिव्यक्ति को मंच प्रदान करना एवं हिन्दी लेखन को प्रोत्साहित करना हैं।

हिन्दी
से ही है
पहचान...

विचार...
संवाद...
समाज...
और एक बैहतर कल...

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com
प्रकाशन एवं बहुद्देशीय संस्था

लेख प्रतियोगिता

लेखक/लेखिका - **उमेश गहलोत**

"अनकही यादें जो शब्दों में बिखर कर रह गईं"

"अनकही यादें जो शब्दों में बिखर कर रह गईं"

कुछ यादें ऐसी होती हैं, जिन्हें हम चाहकर भी किसी के सामने कह नहीं पाते। वे हमारे भीतर जन्म लेती हैं, हमारे साथ चलती हैं और धीरे-धीरे हमारे मन के किसी कोने में अपना घर बना लेती हैं। समय गुजरता रहता है, चेहरे बदलते रहते हैं, रिश्तों के मायने बदल जाते हैं, मगर कुछ स्मृतियाँ ऐसी होती हैं जो समय की पकड़ से बाहर रह जाती हैं। वे कभी किसी पुराने गीत की तरह अचानक सुनाई देती हैं, कभी किसी परिचित खुशबू में लौट आती हैं और कभी किसी अकेली रात में आँखों से चुपचाप बह निकलती हैं।

कहना बहुत कुछ था, मगर कह नहीं पाए।
लिखना बहुत कुछ था, मगर शब्द कम पड़ गए।
और जो बच गया, वही शायद “अनकही यादें” हैं।
यादों का भी अपना एक संसार होता है। वहाँ न कोई दरवाज़ा होता है, न कोई ताला। जब मन चाहता है, वे चली आती हैं। कभी मुस्कान बनकर, कभी आँसू बनकर और कभी एक ऐसी कसक बनकर, जिसका कोई नाम नहीं होता।

हम अक्सर समझते हैं कि बीता हुआ समय बीत गया, लेकिन सच यह है कि समय केवल कैलेंडर से आगे बढ़ता है; मन के भीतर कुछ पल वहीं ठहर जाते हैं। बचपन की वह सुबह, माँ की आवाज़, पिता की डाँट, दोस्तों के साथ बिताए वे बेफिक्र दिन, किसी अपने की पहली मुलाकात, किसी प्रिय का साथ, किसी का अचानक चले जाना ये सब हमारे भीतर कहीं न कहीं जीवित रहते हैं।
कुछ यादें इतनी खूबसूरत होती हैं कि उन्हें याद करते ही चेहरे पर मुस्कान आ जाती है। और कुछ इतनी पीड़ादायक कि उन्हें याद करने भर से आँखें नम हो जाती हैं। लेकिन दोनों में एक समानता है वे हमें भीतर से छूती हैं।

शायद इसीलिए इंसान केवल वर्तमान में नहीं जीता। वह अपने अतीत की स्मृतियों और भविष्य की उम्मीदों के बीच कहीं वर्तमान को जीता है।

कभी-कभी हम किसी व्यक्ति को नहीं, उसके साथ बिताए हुए समय को याद करते हैं। हमें याद आता है कि वह हमारे साथ कैसे हँसा था, कैसे नाराज़ हुआ था, कैसे बिना कहे हमारी बात समझ लिया करता था। फिर एक दिन वही व्यक्ति हमारे जीवन में नहीं रहता, मगर उसकी कही-अनकही बातें हमारे भीतर रह जाती हैं।

तब समझ आता है कि इंसान चला जाता है, लेकिन उसकी यादें नहीं जातीं।
यादें भी अजीब होती हैं। वे कभी पूरी कहानी नहीं सुनातीं। वे बस कुछ दृश्य छोड़ देती हैं एक चेहरा, एक मुस्कान, एक आवाज़, एक स्पर्श, एक अधूरी बातचीत और कुछ ऐसे शब्द जिन्हें हम उस समय समझ नहीं पाए थे।

समय बीतने के बाद जब हम उन शब्दों को याद करते हैं, तब उनके अर्थ बदल जाते हैं।
कभी किसी की कही छोटी-सी बात उस समय सामान्य लगती है, लेकिन वर्षों बाद वही बात जीवन का सबसे बड़ा सबक बन जाती है। कभी किसी की नाराज़गी तब बुरी लगती है, लेकिन उसके जाने के बाद वही नाराज़गी भी अपनापन लगने लगती है।

हम कितनी अजीब दुनिया में जीते हैं
जब लोग हमारे पास होते हैं, तब हम उनके महत्व को पूरी तरह समझ नहीं पाते; और जब वे दूर चले जाते हैं, तब उनकी छोटी-छोटी बातें भी अनमोल लगने लगती हैं।
यही तो यादों की सबसे बड़ी ताकत है।
वे हमें हमारे बीते हुए रिश्तों से जोड़कर रखती हैं।
आज के समय में हम सब बहुत व्यस्त हैं। हमारे पास संदेश भेजने के लिए समय है, लेकिन किसी के पास बैठकर उसकी आँखों में देखने का समय नहीं। हमारे पास सोशल मीडिया पर अपनी खुशियाँ साझा करने का समय है, लेकिन किसी अपने की खामोशी पढ़ने का समय नहीं।

हम तस्वीरें बहुत लेते हैं, मगर उन तस्वीरों में छिपे भावों को महसूस करना भूलते जा रहे हैं।
तकनीक ने हमारी यादों को सुरक्षित रखने के बहुत साधन दिए हैं। मोबाइल में हजारों तस्वीरें हैं, पुराने संदेश हैं, वीडियो हैं, आवाज़ें हैं। फिर भी मन के भीतर एक अजीब-सी खाली जगह बढ़ती जा रही है।
क्योंकि यादें केवल तस्वीरों में नहीं रहतीं।
यादें उस एहसास में रहती हैं जो किसी तस्वीर को देखते समय हमारे भीतर पैदा होता है।
एक पुरानी तस्वीर देखकर हम केवल चेहरा नहीं देखते; हम उस दिन को फिर से जीते हैं।

हमें याद आता है कि उस समय कौन हमारे साथ था, क्या बात हुई थी, किसने क्या कहा था और उस पल हमने कैसा महसूस किया था।
इसलिए कुछ तस्वीरें पुरानी होकर भी कभी पुरानी नहीं होतीं।

कई बार ऐसा भी होता है कि हमारे पास कहने के लिए बहुत कुछ होता है, लेकिन सामने वाला व्यक्ति नहीं होता। तब शब्द कागज़ पर उतरने लगते हैं। कविता बनते हैं, कहानी बनते हैं, डायरी के पन्नों में छिप जाते हैं।
शायद साहित्य का जन्म भी कहीं न कहीं इन्हीं अनकहे भावों से हुआ है।

जो बात हम किसी से कह नहीं पाते, उसे शब्दों में लिख देते हैं।
और फिर वही शब्द किसी दूसरे व्यक्ति के दिल तक पहुँचकर उसकी अपनी कहानी बन जाते हैं।
यही लेखन की सबसे बड़ी खूबसूरती है।
एक व्यक्ति का दर्द हजारों लोगों की संवेदना बन सकता है।

एक व्यक्ति की स्मृति किसी दूसरे व्यक्ति की भूली हुई याद को जगा सकती है।
एक व्यक्ति के शब्द किसी अनजान इंसान को यह एहसास करा सकते हैं कि वह अपनी भावनाओं में अकेला नहीं है।
अनकही यादें इसलिए भी महत्वपूर्ण हैं क्योंकि वे हमारे व्यक्तित्व का हिस्सा होती हैं।
हम जो आज हैं, उसमें हमारे बीते हुए कल की बहुत बड़ी भूमिका है। हमारी सोच, हमारी संवेदनाएँ, हमारे रिश्तों को देखने का नजरिया सब कहीं न कहीं हमारी स्मृतियों से आकार लेते हैं।

बचपन में मिली सीख, माता-पिता का संघर्ष, शिक्षक का मार्गदर्शन, मित्रों का साथ, प्रेम का अनुभव, बिछड़ने का दर्द और असफलताओं की चुभन ये सब हमारी स्मृति में जमा होते रहते हैं और धीरे-धीरे हमें वह इंसान बनाते हैं जो हम आज हैं।

इसलिए अतीत को पूरी तरह भूल जाना संभव भी नहीं और शायद आवश्यक भी नहीं।
हाँ, अतीत में हमेशा जीते रहना उचित नहीं है।
यादों को साथ लेकर चलना चाहिए, उनके बोझ तले दबकर नहीं।

कुछ यादें हमें मुस्कुराना सिखाती हैं, कुछ हमें संभलना सिखाती हैं और कुछ हमें यह सिखाती हैं कि जीवन में किसी की मौजूदगी को कभी हल्के में नहीं लेना चाहिए।

किसी अपने से प्रेम है तो कह दीजिए।
किसी से माफी माँगनी है तो माँग लीजिए।
किसी को धन्यवाद कहना है तो कह दीजिए।

क्योंकि जीवन में सबसे अधिक पीड़ा उन बातों की होती है जिन्हें हम कहना चाहते थे, लेकिन कह नहीं पाए।

समय हमेशा हमारे पास नहीं रहता।
लोग हमेशा हमारे साथ नहीं रहते।
मौके हमेशा लौटकर नहीं आते।
और कुछ मुलाकातें आखिरी होती हैं, जबकि हमें पता ही नहीं होता कि वे आखिरी हैं।

कभी-कभी हम किसी अपने को विदा करते समय यह सोचते हैं कि फिर मिलेंगे। लेकिन जिंदगी हमेशा दोबारा मिलने का अवसर नहीं देती।
फिर हमारे पास बचती हैं कुछ तस्वीरें, कुछ आवाज़ें, कुछ बातें और बहुत सारी यादें।
वे यादें जिन्हें हम किसी से बाँट नहीं पाते।
वे यादें जो रात के सन्नाटे में हमारे पास बैठती हैं।
वे यादें जो कभी आँसू बनकर आती हैं और कभी मुस्कान बनकर।

और अंततः वे शब्द बनकर कागज़ पर बिखर जाती हैं।
शायद इसी कारण कुछ रचनाएँ पढ़ते समय हमें लगता है कि लेखक ने हमारी ही कहानी लिख दी है। क्योंकि भावनाएँ व्यक्तिगत होकर भी सार्वभौमिक होती हैं।
दर्द सबका अलग हो सकता है, मगर दर्द की भाषा एक होती है।

बिछड़ना सबका अलग हो सकता है, मगर खालीपन का एहसास एक जैसा होता है।
याद करना सबका अलग हो सकता है, मगर आँखों की नमी बहुत कुछ कह जाती है।
अनकही यादें दरअसल हमारे भीतर का वह साहित्य हैं, जिसे हमने कभी प्रकाशित नहीं किया।

वे हमारे मन की डायरी के वे पन्ने हैं, जिन्हें शायद किसी ने पढ़ा नहीं, लेकिन जिन्हें हमने बार-बार महसूस किया है।

कभी किसी पुराने रास्ते से गुजरते हुए अचानक कोई स्मृति सामने आ जाती है। वही सड़क, वही पेड़, वही मौसम बस लोग बदल चुके होते हैं। तब लगता है जैसे समय हमारे सामने से गुजरकर बहुत दूर चला गया है और हम वहीं खड़े हैं।

किसी अपने से प्रेम है तो कह दीजिए।
किसी से माफी माँगनी है तो माँग लीजिए।
किसी को धन्यवाद कहना है तो कह दीजिए।

कभी कोई खुशबू पुराने घर की याद दिला देती है।
कभी किसी की आवाज़ किसी बिछड़े हुए व्यक्ति की याद दिला देती है।
कभी बारिश की बूंदें बचपन की छत पर लौटाती हैं।
कभी सर्दियों की धूप में बैठना माँ की गोद जैसा लगता है।
कभी किसी स्टेशन पर खड़ी ट्रेन विदाई के किसी पुराने दृश्य को फिर से जीवित कर देती है।

यादों को किसी निमंत्रण की आवश्यकता नहीं होती।
वे अपने समय पर आती हैं।
और जब आती हैं तो हमें वर्तमान से उठाकर सीधे अतीत में ले जाती हैं।
लेकिन शायद यही जीवन की खूबसूरती भी है।
अगर यादें न होतीं तो हमारे पास जी चुके जीवन का कोई भावनात्मक प्रमाण नहीं होता।
यादें बताती हैं कि हमने प्रेम किया था।
हमने किसी पर भरोसा किया था।
हमने किसी के लिए इंतजार किया था।

हम किसी के लिए रोए थे।
हम किसी के साथ हँसे थे।
हमने किसी को खोया था।

और इन सबके बीच हमने जीवन को महसूस किया था।
इसलिए यादें केवल अतीत नहीं हैं; वे हमारे जीने की गवाही हैं।
आज जब हम अपने आसपास देखते हैं तो पाते हैं कि लोग तेजी से आगे बढ़ रहे हैं। हर कोई सफलता की दौड़ में है। लेकिन इस दौड़ में कहीं न कहीं हम उन छोटे-छोटे पलों को पीछे छोड़ रहे हैं जो वास्तव में जीवन को सुंदर बनाते हैं।

हम बड़ी खुशियों की तलाश में छोटी खुशियों को भूल जाते हैं।
जबकि वर्षों बाद अक्सर हमें वही छोटी बातें याद आती हैं परिवार के साथ बैठकर खाना, दोस्तों के साथ बिना किसी कारण हँसना, किसी अपने का इंतजार करना, किसी का अचानक मिलने आ जाना, चाय की प्याली के साथ लंबी बातचीत करना।

जीवन की असली संपत्ति शायद यही छोटी-छोटी यादें हैं।

पैसा खत्म हो सकता है।
संपत्ति छूट सकती है।
पद बदल सकता है।

लेकिन किसी के साथ बिताया हुआ सच्चा समय हमारे भीतर हमेशा जीवित रहता है।
इसलिए हमें अपने वर्तमान को भी ऐसी यादों से भरना चाहिए जिन्हें भविष्य में याद करके हम मुस्कुरा सकें।
आज किसी अपने से बात कर लीजिए।
आज अपने माता-पिता के पास बैठिए।
आज किसी मित्र को बिना किसी काम के फोन कीजिए।
आज किसी ऐसे व्यक्ति को धन्यवाद कहिए जिसने आपके जीवन में कभी छोटी-सी भी रोशनी लाई हो।
क्योंकि कल जब यही पल याद बनेंगे, तब हमें अफसोस नहीं होना चाहिए कि काश उस दिन थोड़ा और समय दे दिया होता।

अंततः जीवन शायद उन चीज़ों का नाम नहीं जो हमने हासिल कीं, बल्कि उन पलों का नाम है जिन्हें हमने महसूस किया।
कुछ रिश्ते हमारे साथ पूरी जिंदगी नहीं चलते, फिर भी वे हमारी पूरी जिंदगी का अर्थ बदल देते हैं।
कुछ लोग थोड़े समय के लिए आते हैं, मगर उनकी यादें उम्र भर रहती हैं।
कुछ मुलाकातें छोटी होती हैं, मगर उनका असर बहुत गहरा होता है।

कुछ बातें अधूरी रह जाती हैं, मगर वही अधूरापन हमें जीवन भर याद रहता है।
और कुछ प्रेम कहे नहीं जाते, फिर भी पूरी जिंदगी महसूस होते रहते हैं।
अनकही यादें शब्दों में इसलिए बिखरती हैं क्योंकि हर भावना को आवाज़ नहीं मिलती।
कुछ भावनाएँ केवल महसूस की जाती हैं।

कुछ आँसू केवल आँखें समझती हैं।
कुछ खामोशियाँ केवल दिल सुनता है।
और कुछ यादें केवल वही व्यक्ति समझ सकता है जिसने उन्हें जिया है।
शायद इसलिए हर इंसान के भीतर एक ऐसी कहानी होती है जो कभी पूरी तरह कही नहीं जाती।

वह कहानी कभी कविता की पंक्तियों में दिखाई देती है, कभी किसी पुराने खत में, कभी डायरी के पन्नों में और कभी किसी की आँखों में।
हम उसे चाहे जितना छिपाएँ, वह किसी न किसी रूप में बाहर आ ही जाती है।

क्योंकि यादें दबाई जा सकती हैं, मिटाई नहीं।
समय उन्हें धुंधला कर सकता है, समाप्त नहीं।
और शब्द उन्हें बाँधने की कोशिश कर सकते हैं, लेकिन पूरी तरह व्यक्त नहीं कर सकते।
इसीलिए शायद कुछ यादें हमेशा "अनकही" ही रहती हैं।

वे हमारे साथ चलती हैं
बिना कोई शिकायत किए, बिना कोई अधिकार जताए।
और जब कभी हम अकेले होते हैं, वे धीरे से हमारे पास आकर बैठ जाती हैं।
तब हम मुस्कुराते हैं, कभी रोते हैं और कभी बस चुप रहते हैं।

क्योंकि कुछ यादों के लिए शब्दों की आवश्यकता ही नहीं होती।
वे स्वयं एक पूरी कहानी होती हैं।
और शायद हमारी जिंदगी की सबसे खूबसूरत, सबसे सच्ची और सबसे निजी कहानी वही होती है

"अनकही यादें, जो शब्दों में बिखर कर रह गईं..."

- उमेश गहलोत

लेखक परिचय

नाम – उमेश गहलोत
भोपाल मध्यप्रदेश

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com
प्रकाशन एवं बहुद्देशीय संस्था

अन्तरा शब्दशक्ति
प्रकाशन

कलम की शक्ति, समाज की दिशा

सम्मान-पत्र

यह प्रमाणित किया जाता है कि

आ.........**उमेश गहलोत**.........जी

ने हिन्दी पखवाड़े के अवसर पर आयोजित "**एक लेख प्रतियोगिता**" में उत्साहपूर्वक सहभागिता करते हुए **समसामयिक विषय पर अपने विचारों को** प्रभावी एवं सार्थक ढंग से अभिव्यक्त किया।

उनकी साहित्यिक **अभिव्यक्ति** एवं रचनात्मक सहभागिता की सराहना करते हुए **अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन** की ओर से यह **सम्मान-पत्र** सादर प्रदान किया जाता है।

आपकी सृजनशीलता एवं साहित्यिक यात्रा के उज्ज्वल भविष्य की हार्दिक शुभकामनाएँ।

हिन्दी विचारों को विस्तार देती है... समाज को जोड़ती है...

हिंदी
हमारी पहचान...
हमारी शक्ति...

प्रीति सुराना
समकित सुराना

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन एवं संस्था
डॉ. प्रीति समकित सुराना

शब्द से संवेदन तक... लेखन से परिवर्तन तक...